तत्त्वार्थसूत्र

परिचय - पुनरावर्तन

मूलसूत्र

हितोपदेशी वीतरागी

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।

ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये॥

सर्वज्ञ प्रयोजन - भावना

आगे की विषय-वस्तु....

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
अवधिज्ञान का वर्णन	२१	१
क्षयोपशम निमित्तक अवधिज्ञान के भेद तथा उनके स्वामी	२२	१
मन:पर्ययज्ञान के भेद	२३	१
ऋजुमति और विपुलमति में अंतर	२४	१
अवधिज्ञान और मन:पर्ययज्ञान में विशेषता	२५	१
मति , श्रुत , अवधि , मन:पर्यय , केवलज्ञान का विषय	२६-२९	४
एक जीव के एक साथ कितने ज्ञान हो सकते हैं ?	३०	१

मन:पर्ययज्ञान के भेद

ऋजुविपुलमती मन:पर्यय: ॥ २३ ॥

अर्थ - [मन:पर्यय:] मन:पर्ययज्ञान [ऋजुमतिविपुलमति:] ऋजुमति और विपुलमति दो प्रकार का है।

ऋजुविपुलमती मन:पर्यय: ॥ २३ ॥ - मन:पर्ययज्ञान की व्याख्या तथा धारक

- मन:पर्ययज्ञान की व्याख्या नववें सूत्र की टीका में की गई है।
- दूसरे के मनोगत मूर्तिक द्रव्यों को मन के साथ जो प्रत्यक्ष जानता है, सो मन:पर्ययज्ञान है।
- मन:पर्ययज्ञान विशिष्ट संयमधारी (मुनिराज) के होता है।

[श्री धवला पुस्तक ६, पृष्ठ २८-२९]

ऋजुविपुलमती मन:पर्यय: ॥ २३ ॥ - मन:पर्ययज्ञान का कारण तथा विषय

- इस ज्ञान के होने में मन अपेक्षामात्र (निमित्तमात्र) कारण है; वह उत्पत्ति का कारण नहीं।
- इस ज्ञान की उत्पत्ति आत्मा की शुद्धि से होती है।
- इस ज्ञान के द्वारा स्व तथा पर दोनों के मन में स्थित रूपी पदार्थ जाने जा सकते हैं।

[श्री सर्वार्थसिद्धि, पृष्ठ ४४८-४५१-४५२]

ऋजुविपुलमती मन:पर्ययः ॥ २३ ॥ - मन:पर्ययज्ञान का विषय

द्रव्यापेक्षा से मन:पर्ययज्ञान का विषय

- जघन्यरूप से एक समय में होनेवाले औदारिकशरीर के निर्जरारूप द्रव्य तक जान सकता है;
- उत्कृष्टरूप से आठ कर्मों के एक समय में बन्धे हुए समयप्रबद्धरूप[1] द्रव्य के अनन्त भागों में से एक भाग तक जान सकता है।

१. समयप्रबद्ध – एक समय में जितने कर्म परमाणु और नो कर्म परमाणु बंधते हैं, उन सबको समयप्रबद्ध कहते हैं।

ऋजुविपुलमती मन:पर्यय: ॥ २३ ॥ - मन:पर्ययज्ञान का विषय

क्षेत्रापेक्षा से इस ज्ञान का विषय

- जघन्यरूप से दो, तीन कोस तक के क्षेत्र को जानता है
- उत्कृष्टरूप से मनुष्यक्षेत्र के भीतर जान सकता है। [यहाँ विष्कम्भरूप मनुष्यक्षेत्र समझना चाहिए।]

ऋजुविपुलमती मन:पर्ययः ॥ २३ ॥ - मन:पर्ययज्ञान का विषय

कालापेक्षा से इस ज्ञान का विषय

- जघन्यरूप से दो तीन भवों का ग्रहण करता है;
- उत्कृष्टरूप से असंख्यात भवों का ग्रहण करता है।

ऋजुविपुलमती मन:पर्यय: ॥ २३ ॥ - मन:पर्ययज्ञान का विषय

भावापेक्षा से इस ज्ञान का विषय

- द्रव्यप्रमाण में कहे गये द्रव्यों की शक्ति को (भाव को) जानता है।

[श्री धवला पुस्तक १, पृष्ठ १४]

ऋजुविपुलमती मन:पर्यय: ॥ २३ ॥ - मन:पर्ययज्ञान के भेद

- दूसरे के मन में स्थित पदार्थ को भी मन कहते हैं;
- उनकी पर्यायों (विशेषों) को मनःपर्यय कहते हैं,
- उसे जो ज्ञान जानता है, सो मनःपर्ययज्ञान है।
- मनःपर्ययज्ञान के ऋजुमति और विपुलमति – ऐसे दो भेद हैं।

ऋजुविपुलमती मन:पर्यय: ॥ २३ ॥ - मन:पर्ययज्ञान के भेद

ऋजुमति – मन में चिन्तित पदार्थ को जानता हैं, अचिन्तित पदार्थ को नहीं और वह भी सरलरूप से चिन्तित पदार्थ को जानता है।

[देखो, सूत्र २८ की टीका]

ऋजुविपुलमती मन:पर्यय: ॥ २३ ॥ - मन:पर्ययज्ञान के भेद

विपुलमति - चिन्तित और अचिन्तित पदार्थ को तथा वक्रचिन्तित और अवक्रचिन्तित पदार्थ को भी जानता है।

[देखो, सूत्र २८ की टीका]

ऋजुविपुलमती मनःपर्ययः ॥ २३ ॥ - मनःपर्ययज्ञान के भेद

- 'विपुल' का अर्थ विस्तीर्ण-विशाल-गम्भीर होता है। [उसमें कुटिल, असरल, विषम, सरल इत्यादि गर्भित हैं]
- विपुलमतिज्ञान में ऋजु और वक्र (सरल और पेचीदा) सर्वप्रकार के रूपी पदार्थों का ज्ञान होता है।
- अपने तथा दूसरों के जीवन-मरण, सुख-दुःख, लाभ-अलाभ, इत्यादि का भी ज्ञान होता है।

(श्री धवला पुस्तक १३, पृष्ठ ३२८ से ३४४ एवं सूत्र ६० से ७८)

ऋजुविपुलमती मन:पर्ययः ॥ २३ ॥ - मन:पर्ययज्ञान के भेद

विपुलमति मनःपर्ययज्ञानी व्यक्त अथवा अव्यक्त मन से चिन्तित या अचिन्तित अथवा आगे जाकर चिन्तवन किए जानेवाले सर्व प्रकार के पदार्थों को जानता है।

(सर्वार्थसिद्धि पृष्ठ ४४८-४५१-४५२)

ऋजुविपुलमती मन:पर्यय: ॥ २३ ॥ - ऋजुमति का विषय

कालापेक्षा से ऋजुमति का विषय – जघन्यरूप से भूत–भविष्यत के अपने और दूसरे के दो–तीन भव जानता है और उत्कृष्टरूप से उसी प्रकार सात–आठ भव जानता है।

क्षेत्रापेक्षा से – यह ज्ञान जघन्यरूप से तीन से ऊपर और नौ से नीचे कोस, तथा उत्कृष्टरूप से तीन से ऊपर और नौ से नीचे योजन के भीतर जानता है। उससे बाहर नहीं जानता।

ऋजुविपुलमती मन:पर्यय: ॥ २३ ॥ - विपुलमति का विषय

कालापेक्षा से विपुलमतिका विषय – जघन्यरूप से अगले–पिछले सात–आठ भव जानता है और उत्कृष्टरूप से अगले–पिछले असंख्यात भव जानता है।

क्षेत्रापेक्षा में – यह ज्ञान जघन्यरूप से तीन से ऊपर और नौ से नीचे योजन प्रमाण जानता है और उत्कृष्टरूप से मानुषोत्तरपर्वत के भीतर तक जानता है, उससे बाहर नहीं।

(सर्वार्थसिद्धि, पृष्ठ ४५४)

ऋजुविपुलमती मन:पर्यय: ॥ २३ ॥ - मन:पर्ययज्ञान का स्वरूप

विपुलमति का अर्थ-इंग्लिश तत्त्वार्थसूत्र में निम्न प्रकार दिया है —

Complex direct knowledge of complex mental thing. e.g. of what a man is thinking of now along with what he has thought of it in the past and will think of it in the future.

(इंग्लिश तत्त्वार्थसूत्र पृष्ठ ४०)

ऋजुविपुलमती मन:पर्यय: ॥ २३ ॥ - मन:पर्ययज्ञान का स्वरूप

अर्थ – मन में स्थित पेचीदा वस्तुओं का पेचीदगी सहित प्रत्यक्षज्ञान, जैसे एक मनुष्य वर्तमान में क्या विचार कर रहा है, उसके साथ भूतकाल में उसने क्या विचार किया है और भविष्य में क्या विचार करेगा, इस ज्ञान का मनोगत विकल्प मनःपर्ययज्ञान का विषय है। (बाह्य वस्तु की अपेक्षा मनोगतभाव एक अति सूक्ष्म और विजातीय वस्तु है।)

ऋजुमति और विपुलमती में अन्तर

विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ॥ २४ ॥

अर्थ - [विशुद्ध्यप्रतिपाता यां] परिणामों की विशुद्धि और अप्रतिपात अर्थात् केवलज्ञान होने से पूर्व न छूटना [तद्विशेषः] इन दो बातों से ऋजुमति और विपुलमति ज्ञान में विशेषता (अन्तर) है।

अध्याय १: सूत्र २४ - ऋजुमति और विपुलमती में अन्तर

विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ॥ २४ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

टीका — ऋजुमति और विपुलमति यह दो मनःपर्ययज्ञान के भेद सूत्र २३ की टीका में दिए गए हैं। इस सूत्र में स्पष्ट बताया गया है कि विपुलमति विशुद्ध शुद्ध है और वह कभी नहीं छूट सकता, किन्तु वह केवलज्ञान होने तक बना रहता है। ऋजुमति ज्ञान होकर छूट भी जाता है। यह भेद चारित्र की तीव्रता के भेद के कारण होते हैं। संयम परिणाम का घटना–उसकी हानि होना प्रतिपात है, जो कि किसी ऋजुमतिवाले के होता है ॥२४॥

ऋजुमति और विपुलमती में अन्तर

विषय	ऋजुमति	विपुलमति
धारक	अचरमशरीरी मुनिराज	चरमशरीरी मुनिराज
विशुद्धता	विपुलमति से कम	ऋजुमति से ज्यादा
प्रकार	छूट सकता है	कभी नहीं छूटता
पदार्थ का ज्ञान	सरल और चिन्तित	चिन्तित और अचिन्तित; वक्रचिन्तित और अवक्रचिन्तित

ऋजुमति और विपुलमती में अन्तर

विषय का ज्ञान	ऋजुमति	विपुलमति
काल अपेक्षा जघन्य	भूत-भविष्यत के अपने और दूसरे के २-३ भव जानता है	भूत-भविष्यत के अपने और दूसरे के ७-८ भव जानता है
काल अपेक्षा उत्कृष्ट	भूत-भविष्यत के अपने और दूसरे के ७-८ भव जानता है	भूत-भविष्यत के अपने और दूसरे के असंख्यात भव जानता है
क्षेत्र अपेक्षा जघन्य	३ कोस से ऊपर और ९ से नीचे	३ योजन से ऊपर और ९ से नीचे
क्षेत्र अपेक्षा उत्कृष्ट	३ योजन से ऊपर और ९ से नीचे	मानुषोत्तरपर्वत के भीतर तक

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र २३ , २४

आगे की विषय-वस्तु....

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
अवधिज्ञान का वर्णन	२१	१
क्षयोपशम निमित्तक अवधिज्ञान के भेद तथा उनके स्वामी	२२	१
मन:पर्ययज्ञान के भेद	२३	१
ऋजुमति और विपुलमति में अंतर	२४	१
अवधिज्ञान और मन:पर्ययज्ञान में विशेषता	२५	१
मति , श्रुत , अवधि , मन:पर्यय , केवलज्ञान का विषय	२६-२९	४
एक जीव के एक साथ कितने ज्ञान हो सकते हैं ?	३०	१

जिनवाणी स्तुति